ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

भौगोलिक एवं पर्यावरणीय परिवेश में मध्य गंगा घाटी की उपादेयता

Utility of The Middle Ganga Valley In Geographical and Environmental Environment

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 22/10/2021, Date of Publication: 23/10//2021

नीरज बाजपेयी
प्राचार्य,
प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग,
रामकृष्ण परमहंस पी०जी० कालेज,
कैसरगंज, बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

जब हम मध्य गंगा घाटी की उपयोगिता भौगोलिक एवं पर्यावरण के परिक्षेत्र में देखते हैं तो पाते हैं कि गंगा हमारी संस्कृति एवं स्वक्षता का मूल आधार है जिसके कारण भौगोलिक संरचना एवं चारों तरफ से घिरे जंगलों का कायाकल्प दिखाई पड़ता है। गंगा घाटी के मध्य अवस्थित लोगों की धारणा गंगा के प्रति इतनी पवित्र है कि लोग अपना अंतिम समापन गंगा के समीप ही देखना चाहते हैं क्योंकि जो व्यक्ति हरिद्वार एवं प्रयाग में अपना अंतिम स्थान पांता है उसे सीधे स्वर्ग ही प्राप्त होता है। प्रस्तुत लेख में मध्य गंगा घाटी और उसकी सहायक नदियों से प्राकृतिक वातावरण एवं भौगोलिक परिस्थिति का आकलन ही इस लेख की महत्ता को प्रमाणित एवं पुष्ट करता है।

किसी भी देश की भौगोलिक एवं पर्यावरणीय व्यवस्था में नदियों का विशेष महत्व होता है। भारत भी इससे अछूता नहीं। यहां पर पर्याप्त मात्रा में नदियां, जंगल एवं उपत्यकाएँ ग्रामों एवं नगरों में मौजूद है। जिससे प्राचीन काल से संस्कृतियों का जन्म होता रहा तथा समय के अनुरूप पुष्पित एवं पल्लवित होती रही। हस्तिनापुर, अयोध्या, कौशांबी के साथ-साथ प्रतिष्ठानपुर जैसे प्राचीन नगरों के अवशेष नदियों की महत्ता को स्वीकार करते हैं।

When we see the utility of the middle Ganges valley in the geographical and environmental domain, we find that the rejuvenation of the Ganges is seen in our syncretic structure and the forests that surround it.

The belief of the people located in the middle of the Ganges valley is so sacred to the Ganges that people want to see their final end near the Ganges because the person who finds his last place in Haridwar and Prayag

He gets directly to heaven. In the present article, the assessment of the natural environment and geographical conditions from the middle Ganges valley and its tributaries proves and confirms the importance of this article.

Rivers have a special importance in the geographical and environmental system of any country. India is also no exception to this. There is a sufficient amount of rivers, forests and rivers present in the villages and cities.

Due to which cultures were born from ancient times and kept on flowering and flourishing according to the time. The remains of ancient cities like Hastinapur, Ayodhya, Kaushambi as well as Pratishthan Pur acknowledge the importance of rivers

मुख्य शब्दः भौगोलिक एवं पर्यावरणीय परिवेश, भारतीय संस्कृति।
Keywords: Geographical and Environmental Environment, Indian Culture.

प्रस्तावना

गंगा नदी की महत्ता

गंगा भारतीय संस्कृति को अभिव्यक्ति करने वाली एक पुण्य सलिला नदी है जिसमें गंगा, गीता और गौ का त्रिरत्न स्थापित रहा है। स्वर्ग के देवता भी यह गीत गाते हैं कि भारतवर्ष में पैदा होने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने को धन्य समझता है।1 सृष्टि के समय से ही गंगा अमृत जल का वरदान देती है। ऐसा कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति गंगा नाम का उच्चारण करता है उसके समूल पाप का नाश होता है तथा स्नान करने वाले लोगों की सात पीढ़ियों को पवित्र करती है गंगा।2 मत्स्य एवं गरुण पुराण के अनुसार जो व्यक्ति हरिद्वार एवं प्रयाग के संगम में स्नान करता है, मृत्यु के पश्चात उसे स्वर्ग प्राप्त होता है तथा वह पुनः नहीं पैदा होता। इसमें एक विडंबना यह भी है मनुष्य गंगा के महत्व को मानता हो या न मानता हो लेकिन यदि गंगा के तट पर उसकी मृत्यु होती है तो उसे स्वर्ग ही प्राप्त होता हैं

भागवत पुराण में एक कथा विस्तार से पाई जाती है कि राजा भगीरथ तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। यह कथा देवी भागवत में सूर्यवंशी नरेश सगर के अभिशप्त पुत्रों के मोक्ष के लिए पृथ्वी पर लाए थे, के संदर्भ में मिलती है।4 ऐसा कहा जाता है राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया तथा अपने साठ हजार पुत्रों के नेतृत्व में काले घोड़े भी

छोड़े। इस यज्ञ के ही माध्यम से राजा सगर इंद्र का स्थान लेना चाहते थे। इंद्र राजा सगर की इस कार्यवाही से काफी भयभीत हुआ और अपनी रक्षा करने के लिए उपाय किया कि जैसे ही यज्ञ का घोड़ा सगर पुत्रों की आंख से ओझल हुआ , इन्द्र ने उसे पाताल लोक के महामुनि कपिल के आश्रम में बांध दिया। खोजते खोजते सागर पुत्र कपिल के आश्रम में पहुंचे और चोर समझ कपिल, जो ध्यान मुद्रा में अवस्थित थे, को अपमानित किया। कपिल के विरोध में सगर के 60000 पुत्र भस्म हो गए। सगर को यह समाचार नारद मुनि द्वारा दिया गया और कहा गया कि केवल पवित्र पावनी गंगा ही मृत्युलोक में आकर शापित सगर के पुत्रों को मुक्ति दिला सकती हैं

वेदों में गंगा की सार्थकता

गंगा का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के दशम मंडल में मिलता है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के अनुसार गंगा भारत की प्रसिद्ध नदियों में अपना स्थान प्रथम रखती है।6 गंगा एक ऐसी नदी है जिसने अपने जीवन में काफी उतार-चढ़ाव, उन्नति एवं अवनति देखें है। साहित्य के साथ-साथ समय समय पर आने वाले विदेशी यात्रियों ने भी अपने यात्रा संस्मरण में गंगा की महत्ता को परिभाषित किया है, इस प्रकार भारतीय जनमानस में गंगा एक ऐसी नदी है जो भौगोलिक दृष्टि के साथ-साथ सांस्कृतिक दृष्टि से भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

भौगोलिक एवं धार्मिक सद्भावना के अतिरिक्त गंगा का एक तीसरा भी स्वरूप है जिसमें वह कभी महर्षि जहवन की कन्या बनती है तो कभी हस्तिनापुर नरेश शांतनु की प्राणप्रिया भी बनती है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि भारत की राष्ट्रीय अस्मिता सुरक्षित एवं संजोए रखने में यदि हिमालय शीश है तो गंगा ह्रदय तथा समुद्र चरण है[7] अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत उत्तर भारत के मैदान का एक बहुत बड़ा भूभाग गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा सृजित है। गंगा के मैदान के चरणबद्ध विकास का कारण हिमालय की पट्टिकाओं में होने वाले भूतात्विक घटनाओं एवं इसके फलस्वरूप बेसिन का दक्षिणावर्ती विस्तार है।[8] हिमालय और विंध्य पर्वत श्रृंखला के मध्य विस्तृत गंगा का मैदान मूल रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1. ऊपरी गंगा का मैदान
2. मध्य गंगा का मैदान
3. निम्न गंगा का मैदान

ऊपरी गंगा घाटी की महत्ता

ऊपरी गंगा घाटी प्राचीन समय में सघन वनों से आच्छादित थी जिसकी प्रमुख नदी गंगा थी। यहां के ४५ प्रतिशत भूभाग पर ही वन पाए जाते हैं।9 निम्न गंगा का मैदान अत्यंत समतल है। गंगा का निचला मैदान वास्तव में गंगा नदी का डेल्टा क्षेत्र है। इस संपूर्ण मैदानी भाग में गंगा ही प्रमुख जो इस भाग में पश्चिम में प्रवेश करके दक्षिण पूर्व में प्रवाहित होती है। निम्न गंगा घाटी में गंगा की पश्चिमी शाखा जिसे आगे चलकर हुगली कहते हैं,अत्यंत महत्वपूर्ण है। पश्चिम में हुगली नामक गंगा की धारा रह गई है।[10]वर्तमान परिदृश्य में भौगोलिक एवं पर्यावरणीय परिवेश में मध्य गंगा नदी की क्या उपयोगिता रही, पर विस्तार से चर्चा करना ही इस लेख की महत्ता को प्रमाणित करेगा इसलिए मध्य गंगा घाटी के इस क्षेत्र में उपादेयता का विस्तार से चर्चा ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य होगा

मध्य गंगा घाटी की महत्ता

प्राचीन भारत में मध्य गंगा घाटी का विस्तार उत्तर से दक्षिण 320 किलोमीटर के क्षेत्र में तथा पूर्व से पश्चिम 600 किलोमीटर तथा आयताकार रूप में पाया जाता है।11 उत्तर में शिवालिक, हिमालय व दक्षिण में विंध्य के पठार से घिरा मध्य गंगा घाटी के मैदान की पूर्व व पश्चिम में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। पश्चिम व पूर्ववर्ती किनारों पर इस मध्यवर्ती मैदानी भाग व इसके दोनों सीमाओं के पास स्थित मैदानी भाग में कोई अंतर नहीं दिखाई देता है, फिर भी बिहार व बंगाल प्रांतों की सीमा रेखा इसके पूर्व छोर का निर्धारण करती है और इलाहाबाद से जाने वाली रेलवे लाइन को इसकी पश्चिमी रेखा माना गया है।[12] इस प्रकार मध्य गंगा घाटी के अंतर्गत इलाहाबाद की हड़िया व फूलपुर तहसील, मिर्जापुर जनपद का उत्तरी भूभाग, वाराणसी की भदोही, वाराणसी का चकिया तहसील, प्रतापगढ़ की पट्टी तहसील, जौनपुर सुल्तानपुर की कादीपुर तहसील, बलरामपुर की उतरौला, फैजाबाद की टांडा, अकबरपुर, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया तथा बिहार में तिरहुत भागलपुर (किशनगंज तहसील को छोड़कर) तथा पटना संभाग सम्मिलित है।[13] मध्य गंगा घाटी का क्षेत्र मानवीय दृस्टि के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से अधिक महत्व रखता है।

सहायक नदियों की भूमिका

मध्य गंगा घाटी की प्रमुख नदी के रूप में गंगा ही जानी जाती है किंतु इसमें कुछ सहायक नदियां एवं धनुषाकार झीलें है जिनसे छोटी-छोटी नदियों का उद्भव होता है। इन की सहायक नदियों में सई, सोन, नदी,"मती, वरना, घाघरा, गंडक और कोसी के साथ साथ बूढ़ी गंडक भी अपना विशेष महत्व रखती है।

सई- यह नदी हरदोई जनपद के झील से निकलकर लखनऊ को उन्नाव से विभाजित करती हुई रायबरेली प्रतापगढ़ से होती हुई जौनपुर के परगना गढ़वारा में प्रवेश करती है।14

सोन नदी- यह नदी छोटा नागपुर के पठार की ओर से गंगा में मिलने वाली सबसे बड़ी नदी है। इसकी प्रमुख सहायक नदी कोयल है। प्राचीन समय में सोन नदी को मागधी, सोना सहित अन्य नामों से भी पुकारा जाता है। इसका उद्गम गोंडवाना क्षेत्र में स्थित मैकाल पर्वत के अमरकंटक नामक पठारी भाग से हुआ है।[15]

गोमती- पीलीभीत जनपद के गो मलताज से उद्भूत और लखीमपुर, सीतापुर, लखनऊ, बाराबंकी और सुल्तानपुर जिले में प्रवाहित होती हुई तहसील शाहगंज के परगना चांदा में प्रवेश करती है तथा गाजीपुर के सैदपुर के निकट गंगा में मिल जाती है।[6]

वरना- इलाहाबाद के मदाहन झील से निकलकर 60 मील तक मिर्जापुर और जौनपुर की सीमा स्थापित करती हुई वाराणसी नगर के गंगा में मिल जाती है।[7]

घाघरा- यह नदी नेपाल की तराई से निकलकर बहराइच जनपद में प्रवाहित होती है। अल्मोड़ा में इसे सरजू भी कहते हैं।18 बहराइच से 90 किलोमीटर तक प्रवाहित होने के बाद कौड़ियाला में मिल जाती है। इसके प्राचीन प्रवाह मार्ग को देखते हुए प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में कौड़ियाला से भिन्न धारा में प्रवाहित होती हुई यह घाघरा नदी में मिलती थी। यह बहराइच जिले से निकलकर गोंडा जिले के घाघरा में मिलती है। सरयू घाघरा के संगम के बाद यह नदी घागरा के नाम से ही जानी जाती है।

गंडक- यह नदी उत्तर प्रदेश व बिहार की लगभग 120 किलोमीटर की सीमा रेखा का निर्माण करती है। इसकी दिशा घाघरा की भांति दक्षिण पूरब है। यह नदी गंगा की प्रमुख सहायक नदियों में से एक है।यह पटना के पूर्व में हाजीपुर एवं सोनपुर के मध्य प्रवाहित होती हुई मुजफ्फरपुर एवं सारण जिला की सीमा बनाते हुए गंगा में विलीन हो जाती है।[9]

कोसी नदी- यह बिहार में गंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है इसका पौराणिक नाम कौशिकी है। इस नदी का निर्माण वस्तुतः पूर्वी नेपाल में स्थित सप्तकौशिकी क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली सात जल धाराओं से बनने वाली तीन नदियों के संगम से हुआ। इस नदी में 200 वर्षों में अपना मार्ग लगभग 160 किलोमीटर पश्चिम की ओर कर लिया तथा मनिहारी से 32 किलोमीटर पहले ही गंगा में विलीन हो जाती है।[20]

बूढ़ी गंडक- यह नदी चंपारण जिले में गंडक नदी के बिल्कुल समानांतर बहती है। इन दोनों नदियों का अतीत एक जैसा रहा। यह बिहार में चंपारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और उत्तरी मुंगेर जिले में प्रवाहित होती हुई गंगा में समा जाती है ।

मध्य गंगा घाटी की जलवायु

मध्य गंगा घाटी की जलवायु पश्चिम में शुष्क ऊपरी गंगा घाटी और पूरब में अतिआरद्र निम्न घाटी की मध्यवर्ती दशाओं वाला है। यहां वर्षा काल जून से शुरू होता है तथा अक्टूबर के शुरूआत तक रहता है। दूरस्थ क्षेत्रों की तुलना में पर्वत के निकट रहने वाले क्षेत्रों में वर्षा अधिक होती है। वर्षा मूसलाधार एवं प्रचुर होने के साथ-साथ परिवर्तनशील भी है। सूखे की स्थिति दुर्लभ होती है।[22] शीतकाल में तापमान दक्षिण से उत्तर की ओर कम होता है। जनवरी में न्यूनतम तापमान 13 सेंटीग्रेड और अधिकतम 25 सेंटीग्रेड रहता है लेकिन शीतलहर के प्रभाव से कभी-कभी तापमान काफी गिरावट आ जाती है। ग्रीष्म काल में तापमान काफी बढ़ जाता है। मार्च से जून तक तापमान बराबर बढ़ता रहता है। मध्य गंगा के मैदान में उत्तरभाग की अपेक्षा दक्षिणी भाग में तापमान अधिक ऊंचा पाया जाता है

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान में प्राचीन भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों को गंगा की उपयोगिता एवं पर्यावरण के क्षेत्र में उसकी उपादेयता को अवगत कराना ही इस शोध पल का मुख्य उद्देश्य है।

मध्य गंगा घाटी में मिट्टियों का वर्गीकरण

.गंगा के मैदान का निर्माण गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा हुआ। यहां पर मिट्टियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया जा सकता है।

1. तराई मिट्टी
2. वन मिट्टी
3. काँप मिटटी

मध्य गंगा घाटी में उत्तर सीमा पर गोंडा से लेकर बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, चंपारण जिले के उत्तरी भूभाग पर चैड़ी मिट्टी मिलती है। यह मिट्टी चीका प्रकार की है और इसमें भारी नहीं रहती है। पर्वतीय तथा वन मिट्टी बिहार के चंपारण जिले के उत्तरी भाग में पाई जाती है। काँप मिट्टी को दो भागों में बांटा जा सकता है- भागार व खादर[23]भगार मिटटी नदियों के बाढ़ के मैदान से दूर ऊंचे भूभाग पर पाई जाती है। यह मिट्टी काफी उपजाऊ है तथा भारी जल संग्रह की क्षमता रखती है। यह मिट्टी चावल की खेती के लिए काफी उपयुक्त है।[24]

खादर मिट्टी नदियों के प्रवाह मार्गो, बाढ़ के मैदानों में अधिक पाई जाती है। इसमें काफी नमी रहती है जिसके कारण खेती करना काफी सरल होता है। घाघरा एवं नदियों के क्षेत्र में यह रेतीली है।

मध्य गंगा घाटी में तीन प्रकार की फसलें पाई जाती है- भदई, अगहनी और रवी उगाई जाती है। तिलहन और गन्ने की बुवाई क्षेत्र विशेष में होती है। इसकी मुख्य फसल धान है। कोदव, ज्वार और बाजरा की खेती बहुत कम होती है। इस क्षेत्र में कपास की खेती विलुप्त होती जा रही है। थोड़ी बहुत इसकी खेती गंडक व कोसी नदी के मध्य तिरहुत क्षेत्र में होती है। यह रोचक तथ्य है कि नील व अफीम पूर्ववर्ती कालों में नगदी फसल के रूप में प्राप्त थे किन्तु अब व्यावहारिक रूप से विलुप्त हैं।[25]

मध्य गंगा घाटी की वनस्पतियां शुष्क पर्णपाती है। पराग विश्लेषण अध्ययन से पता चलता है कि अतीत में यह क्षेत्र घास वाली वनस्पतियों से पूर्ण रूप से आच्छादित था।26 बढ़ती हुई आबादी व मानवीय गतिविधियों के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक वनस्पतियों का विकास हुआ। अब केवल तराई क्षेत्र में जहां खेती के लिए अनुपयुक्त व दलदली जमीन है वहां वनो के रूप में प्राकृतिक वनस्पतियां आज भी सुरक्षित है। नदियों के खादर क्षेत्र में जल धाराओं के मध्य बालू के बड़े वह लंबे क्षेत्र है जिससे स्थानीय लोग दियारा कहते हैं।[27] गंगा के मध्यवर्ती मैदान में सवाई घास विशेष रूप से प्राप्त होते हैं उत्तरी बिहार के मैदान में विशेषकर बाग कुंज तथा दलदली बनस्पति अधिक मिलती है। निचली गंगा,घाघरा, दोआब के अधिकतर जिले क्रमशः बलिया, गाजीपुर, जौनपुर तथा उत्तरी बिहार के मुजफ्फरनगर दरभंगा तथा सहरसा में वनक्षेत्र अत्यंत कम मात्रा में प्राप्त होते हैं। गंगा के दक्षिणी भाग के जिलों में अधिकतर वन मैदानी भाग से बाहर है। सरयू पार में गोरखपुर, गोंडा तथा बहराइच जिले के कुछ भागों में अत्यधिक संख्या में वन प्राप्त होते हैं।

मध्य गंगा घाटी में भूमि व जलवायु की उत्कृष्टता के कारण सर्वत्र घास उगती है। जनसंख्या कम होने के कारण वनस्पतियों का आच्छादन कई गुना अधिक था। जंगली जानवरों की संख्या बहुत आई थी जिसमें नीलगाय, हिरन, चीतल, लकड़बग्घा, भालू ,सियार, लोमड़ी मुख्य थी। काले हिरनों के झुड गांव के आसपास देखे जा सकते थे। वनस्पति क्षेत्रों का कृषि क्षेत्रों के रूप में परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात उपलब्ध हथियारों ने जंतुओं की आबादी को कम कर दिया मतलब वन्य जीवों का शिकार होने लगा। मध्य गंगा घाटी के मैदानों में घास चरने वाले ही पशु रह सकते थे। पीने के लिए पानी का पर्याप्त इंतजाम था। जब उत्तर विंध्य क्षेत्र से लोगों का पलायन मध्य गंगा घाटी की ओर हुआ तो लोगों का परिचय जानवरों से हुआ जो उस समय यहां के जंगलों में रहते थे। कुछ पशुओं का उपयोग दूध खाने के लिए कुछ पशुओं का उपयोग मांस खाने के लिए किया जाता था। धीरे-धीरे लोगों ने पशुओं की उपयोगिता का समझा कुछ पशुओं का प्रयोग हल जोतने, सवारी ढोने तथा बोझा ढोने के रूप में किया जाता था। प्रायः सभी पशुओं के चर्म का प्रयोग भी जूता बनाने के साथ-साथ ढाल रस्सी बनाने के लिए भी किया जाता था। भेड़ बकरियों का प्रयोग ऊन वस्त्र बनाने में किया जाता था। हाथी घोड़े एवं ऊंट की उपयोगिता रहती थी। कुछ पशुओं की बलि के द्वारा देवताओं एवं पितरों को परितप्त किया जाता था। वैदिक काल में गायों के सर्वोच्च प्रतीकों में से गायों का स्वामित्व प्रमुख रहा। असंख्य लोग गायों एवं अश्वों के द्वारा धनी बनने की कामना करते थे।28 गाय आज भी महत्वपूर्ण जानवर है। अश्व अपने तेज गति एवं शक्ति के कारण आज भी उतना ही महत्व रखता है जितना पहले था। सिंधु सभ्यता के युग में भारत में गो, भैंस, बकरी, हाथी, सूअर, गधे पाले गए। प्राचीन काल में हाथी एवं घोड़ों का उपयोग राजाओं के लिए काफी विशेष महत्व रखता था। महाभारत के अनुसार किसी राजा के अश्वों की संख्या अरबों तक हो सकती थी।29 मध्य गंगा घाटी जब वनों से पूरी तरह से आच्छादित तो इन में पाए जाने वाले पशुओं एवं जीव जंतुओं में विविधता थी। मानव समाज की आवश्यकताओं ने जंगलों को नष्ट करने में महती भूमिका अदा की जिसके कारण भौतिकता को बढ़ावा मिला तथा पशुओं का महत्व कम होता गया। उसका महत्वपूर्ण कारण जंगलों का समाप्त हो जाना भी रहा इसीलिए इस क्षेत्र में जंगलों की कमी के कारण जंगली जानवरों का अब तक उतना महत्व नहीं रहता।

निष्कर्ष

गोखुर एवं धनुषाकार झीलें मध्य गंगा घाटी की विशेषता थी। इन झीलों में जलीय जीव जंतुओं की प्रधानता थी। इन के चारों ओर की जंगली भूमि जंगली घासों से आच्छादित थी जिसमें कुछ खाने योग्य आज भी थे। यह झीलें मानव की आवश्यकताओं के कारण पूरी तरह से भर गई किंतु कुछ झीलों का स्वरुप आज भी विद्यमान है। मध्य गंगा घाटी में झीलों के जमावो से इस बात का पता चलता है कि गंगा का मैदान मुख्य रूप से घास का मैदान था जिसमें जंगली झाड़ियों की प्रधानता थी। इस प्रकार वर्तमान परिदृश्य में मध्य गंगा घाटी की उपादेयता भौगोलिक एवं पर्यावरणीय परिदृश्य में कितना महत्वपूर्ण थी इसका सहज अनुमान उक्त लेख की व्यापकता से लगाया जा सकता है I

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विष्णु पुराण २/३/२४ गायन्ति देवा किल गीतिकानी सेभवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वाद
2. महाभारत का अनुशासन पर्व ३६/२६/३०-३१
3. वराहपुराण अध्याय ८२
4. देवी भागवत स्कंद ९ के ११वें श्लोक (श्लोक ४ से ७५ तक) तथा १२वें (श्लोक १ से ७९ जा)
5. देवी भागवत स्कन्द ९/११/८/९
6. ऋग्वेद १०, ७५, ५-६
7. टाइलर, ई० वी० १८७३ प्रिमिटिव कल्चर- रेसर्चेस इन द डेवलपमेंट ऑफ़ माइथोलॉजी, फिलॉसोफी,रिलिजन, आर्ट एंड कस्टम वॉल्यूम १ द्वितीय संस्करण लन्दन पेज ४७७
8. आई० वी० सिंह १९९६ जियोलाजिकल इवैल्यूएशन ऑफ़ गंगा प्लेन एंड ओवरव्यू, जर्नल ऑफ़ थे पैलिओंटोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया अंक ४ पेज १३३
9. स० क्यी० बंसल २००१, भारत का वृहद भूगोल, मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ सातवां संस्करण पेज ६५४
10. स० सी० बंसल, २००१ पेज ६९०
11. ग्रन्थ में चूंकि मध्य गंगा घाटी के प्रारंभिक नगरीकरण का अध्ययन किया जायगा अतैव यहां मध्य गंगा घाटी का वृस्तत विवेचन किया गया है।
12. आर० ऐल० सिंह - १९७१ पेज ७ से १२४
13. उपरोक्त
14. राजदेव दूबे एवं प्रमोद कुमार सिंह १९८८, जौनपुर का ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक व्यक्तित्व वाराणसी पेज ७
15. इंतियाज एहमद एवं कमर एहसन १९९४, बिहार एक परिचय पटना पेज ५६
16. सय्यद इक़बाल एहमद १९६८, सर्किल राज्य जौनपुर का इतिहास पेज ८१५, ददृष्टव्य- ए० ई० समालस, आर्थर ई० - १९५३ थे जियोग्राफी ऑफ़ थे द, लन्दन पेज २३
17. राजदेव दुबे एवं प्रमोद कुमार सिंह १९८८ पेज ७
18. इस नदी के ऊपरी भाग में भूतात्विक अध्ययनों से पता चला कि अपने उद्धभव स्थल पर यह एक हिम नदी है इसके चतुर्थ आसीन जमाओं का भी अध्ययन किया गया है जिसमें बोल्डर, ग्रेवल, निसीन, फूंतज्रपजम और दूसरे प्रस्तर पिंड उपलब्ध होते हैं असंभव नहीं कि प्राचीन काल में यह नदी अपने साथ लघु पाषाण उपकरणों के निर्माण में प्रयुक्त प्रस्तर पिंड भी लायी गयी होगी जिसका प्रयोग गंगा घाटी कि मध्य पाषाणिक लोगों ने किया था। ऐल० स० चम्याल १९६७, A preliminary on the quaternary deposits of the upper Saryu basin in Kumaun Himalaya, Man and Environment Vol. 11 Indian Society for Prehistoric and quaternary studies, Pune
19. इम्तियाज़ एहमद एंड कमर एहसन १९९४ बिहार एक परिचय पटना पेज ५५-५६
20. आर० सी० तिवारी २००३ जियोग्राफी ऑफ़ इंडिया प्रयाग पुस्तक भंडार इलाहाबाद पृष्ठ १०२
21. इम्तियाज़ एहमद एंड कमर एहसन १९९४ बिहार एक परिचय पटना पेज ५६
22. एच० रॉबिंसन १९६६ मानसून एशिया, मैक्डोनाल्ड एंड एवंस लिमिटेड लन्दन पेज १६९
23. ड़ी० एन० वाडिआ १९५७, जियोलॉजी ऑफ़ इंडिया टाटा मैग्राहील पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली पेज ३९४-३९५
24. मज़ीद हुसैन १९९४ इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडिया वॉल्यूम २६ बिहार नई दिल्ली पेज १२
25. एच्० रॉबिन्सन १९६६ पेज १६९-१७०
26. एच्० पी० गुप्ता १९७६ Holocene Polynology from Miender lake in the Ganga valley जिला प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश, The paleobotanist २५ पेज १०९-११९
27. आर० ऐल० सिंह १९७१ पेज २००
28. ऋग्वेद- १.२९
29. महाभारत सभापर्व ४८.३६